TDC-III (H) | Corruption | Pol. Science
Paper-V | भ्रष्टाचार | Dr. S.B. Kr.

यह बात सर्वविदित है कि सार्वजनिक सेवाओं में अनेक प्रकार के भ्रष्टाचार आ गए हैं तथा भारतीय प्रशासन में इसका प्रकोप काफी बढ़ चुका है। आज संपूर्ण भारतीय समाज में यह व्याप्त है और सारी जनता इससे परेशान हो गई है। प्रत्येक सरकारी विभाग में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो अपने स्वार्थ के लिए जनहित का कुछ भी ख्याल नहीं करते। यही कारण है कि आज जनता और सरकारी सेवकों के बीच दूरी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

भ्रष्टाचार के कारण (Causes of Corruption):

भ्रष्टाचार के कारणों की कोई सीमा नहीं है फिर भी भ्रष्टाचार के तीन कारणों का उल्लेख किया जा सकता है—

1) सामाजिक कारण (Social Causes) — हमारे देश में भ्रष्टाचार बढ़ने का मुख्य कारण सामाजिक नैतिकता और सामाजिक ढांचा है। हमारे देश में सामाजिक नैतिकता का स्तर निम्न है। भारतीय समाज और प्रशासन में अनेक अत्याचार होते रहते हैं; परंतु उनके विरुद्ध आवाज उठाने वाले बहुत कम हैं। नाजायज तरीके से पैसे कमाने वाले को काफी सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। हमारे समाज का ढांचा और नैतिकता ही ऐसी है जहाँ भ्रष्टाचार का विकास होना स्वाभाविक है। एक तरफ अधिकारी वर्ग घूस लेने से नहीं कतराता है तो दूसरी तरफ आम नागरिक भी कर चोरी में संलिप्त रहता है। जब तक समाज में नागरिकों और सेवकों की यह धारणा रहेगी, तबतक भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं किया जा सकता।

2) आर्थिक कारण (Economic Causes) — किसी देश की आर्थिक स्थिति का प्रभाव भी वहाँ के प्रशासन पर होता है। दयनीय आर्थिक स्थिति वाले देश में प्रशासन भी भ्रष्ट होता है क्योंकि गरीब देश अपने प्रशासनिक कर्मचारियों को उतना वेतन नहीं दे सकता जिससे कि वह अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। ऐसी स्थिति उन्हें भ्रष्ट आचरण की ओर उन्मुख करती है। यह बात भी सही है कि प्रशासन में ऐसे लोगों की ही संख्या अधिक है जो अपने वेतन से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते। अतः वे घूस लेने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

3) राजनीतिक कारण (Political Causes) — भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण उस देश की राजनीतिक व्यवस्था भी होती है। राजनीतिक दलों के कारण भी भ्रष्टाचार फैलता है। भारत में प्रशासन की बागडोर बड़े-बड़े राजनीतिक नेताओं के हाथों में है जिनके ऊपर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगते रहते हैं फिर भी वे प्रशासनिक पदों पर बने रहते हैं। अपने अज्ञान के कारण

Scanned with CamScanner

मंत्रियों को प्रशासकों पर काफी निर्भर रहना पड़ता है जो उनकी कमजोरी का फायदा उठाते हैं और प्रशासकों के साथ-साथ वे भी उसी राह के राही बन जाते हैं। राजनीतिज्ञों का अफसरशाही एवं अपराधियों के साथ निकट संबंध स्थापित हो चुका है जो भ्रष्टाचार के राजनीतिक कारण बनते हैं।

शक्ति के प्रति आसक्ति के कारण भी राजनीतिज्ञों में भ्रष्टाचार की वृद्धि होती है क्योंकि वे अब राजनीतिक सत्ता को प्राप्त करने में भ्रष्ट साधनों के प्रयोग से भी नहीं हिचकते हैं। राजनीतिक दलों द्वारा निर्वाचन कोष में धन जमा करने की प्रवृत्ति भी भ्रष्टाचार को विकसित करने में कम सहायक नहीं रही है। राजनीतिक दलों का संगठित भ्रष्टाचार चुनाव के समय विशेष रूप से उभरता है।

भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय-(Measures to Remove Corruption):- आज आधुनिक युग का यह एक यक्ष प्रश्न है कि भ्रष्टाचार के दुष्ट दानव से कैसे मुक्ति मिले। यह बात भी सही है कि इसे जड़ से समाप्त करना आसान नहीं है, फिर भी इस दिशा में प्रयास तो किया ही जा सकता है। भ्रष्टाचार को दूर करने के कुछ उपायों की चर्चा निम्नवत है:

1.) भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए वृहत शिक्षा योजना और सामान्य आर्थिक विकास अनावश्यक है। इसके लिए लोगों में नैतिकता का विकास बहुत जरूरी है ताकि लोगों में उचित अनुचित का फर्क मालूम हो सके।

2.) एक प्रभावशाली भ्रष्टाचार रोधी संस्था की स्थापना आवश्यक है तथा उसे अधिक से अधिक निष्पक्ष और कर्मठ बनाने की आवश्यकता है।

3.) सरकारी कर्मचारियों को एक सम्मानजनक वेतन मिलना चाहिए ताकि वे भ्रष्टाचार की तरफ उन्मुख न हों।

4.) घूस लेने वाले कर्मचारियों को अधिक से अधिक दंड देने की व्यवस्था करनी चाहिए।

5.) भ्रष्टाचार रोधी कानूनों का निर्माण बहुत आवश्यक है।

6.) भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए स्वस्थ जनमत का निर्माण किया जाना चाहिए।

7.) प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर भ्रष्ट कर्मचारियों का पता लगाने के लिए गुप्त समितियों की स्थापना की जानी चाहिए।

8.) लोकपाल तथा लोकायुक्त के पदों को पूरी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए ताकि भ्रष्ट आचरण पर कड़ा प्रहार हो सके।

9.) मंत्रियों के विरुद्ध स्वतंत्र न्यायिक जाँच की व्यवस्था भी भ्रष्टाचार को समाप्त करने में सहायक हो सकती है।

—x—

Scanned with CamScanner